



ओ३म्

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र जून 2017 (द्वितीय)

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

21 जून 2017



Email : aryapsharyana@yahoo.in

Visit us : www.apsharyana.org



विशेष ध्यान न देने से व्यक्ति ईश्वर के साथ सम्बन्ध नहीं जोड़ पाता है।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,118
विक्रम संवत् 2074
दयानन्दाब्द 194

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख पत्रिका

वर्ष 13

अंक 10

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क**देश में**

वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में

वार्षिक शुल्क 100 डॉलर

आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,

गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

सम्पर्क सूत्र-

चलभाष : 89013 87993

कार्यालय : 01262-216222

ओ३म्

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं
वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

जून, 2017 (द्वितीय)

16 से 30 जून, 2017 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय—
महर्षि दयानन्द और वेद 2
2. वह महामानव कौन था जिसने भगत सिंह को
शहीदे आजम भगत सिंह बना दिया ? 3
3. वेदव्याख्या की अपेक्षा और सहायक तत्त्व 5
4. जहाँ से आरम्भ किया था 7
5. ऐसी भी हैं वैदिकसिद्धान्तसिक्त सन्तानें 8
6. पर्यावरण की रक्षा करें 9
7. भजन—मांगें यह वरदान... 10
8. स्वामी रुद्रवेश जी का जीवन एक प्रेरणास्रोत 11
9. देवदयानन्द की 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में
रही भूमिका 12
10. गायत्री मन्त्र-गुरुमन्त्र-गुरु परमात्मा है 14
11. समाचार-प्रभाग 15

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001

E-mail : aryapsharyana@yahoo.in

aryasabhaharyana@gmail.com

जो कर्म इस जन्म में किये जाते हैं, उनमें से कुछ कर्म इस जन्म में फल देते हैं और कुछ कर्म अगले जन्मों में।

महर्षि दयानन्द और वेद

□ उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

जिस प्रकार माता-पिता एवं परिवार के सदस्य नवजात शिशु का पालन-पोषण करते हुए कालान्तर में उसे चलना सिखाते हैं और फिर बोलना एवं अन्य व्यावहारिक ज्ञान का प्रशिक्षण देते हैं ठीक उसी प्रकार सृष्टि उत्पन्न कर ईश्वर ने वेदों का ज्ञान चार ऋषियों के हृदय में प्रकट किया और उन्हें बोलना सिखाया। वेदों में मानव जीवन के लिए आवश्यक कर्तव्य कर्मों का विधान किया गया है। उस समय वेदों से ही सब पदार्थों के नाम एवं सर्वविध व्यवहारों का प्रचलन हुआ।

वेदों को व्यावहारिक जीवन का अंग बनाने के लिए ऋषियों ने कर्मकाण्ड की व्यवस्था की। विभिन्न मंत्रों का विनियोग कर्मकाण्ड विशेष के साथ जोड़ दिया। शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थ वेदों के व्याख्यान ग्रन्थ हैं, जिनमें वैदिक सिद्धान्तों को कर्मकाण्ड के माध्यम से समझाने का प्रयत्न किया है। जब कोई समझ नहीं आती तो उसे कोई उदाहरण देकर समझाते हैं। वैसे ही ब्राह्मणग्रन्थों को वेदों के व्याख्यान ग्रन्थ समझना चाहिए। शतपथ ब्राह्मण के रचयिता महर्षि याज्ञवल्क्य महाभारत से कुछ पहले हुए हैं। महाभारत युद्ध के बाद ऋषि-मुनियों का लोप हो गया। बड़े-बड़े योद्धा व विद्वान् इस युद्ध में मारे गए। जैसे सूर्य के अस्त हो जाने पर लोग दीपक आदि से अपने आवश्यक कार्यों की पूर्ति करते हैं, वैसे ही वेदों का सूर्य अस्त हो जाने के कारण अनेक मत-मतान्तर और सम्प्रदायों की उत्पत्ति हुई। कर्मकाण्ड के नाम पर यज्ञों में पशु हिंसा का प्रचलन हुआ। महात्मा बुद्ध के जीवन की एक घटना है—वे कहीं चले जा रहे थे कि उन्होंने देखा एक गड़रिया भेड़-बकरियों को प्रताड़ित करता हुआ ले जा रहा है। उसके दण्ड प्रहार से कितने पशु पीड़ित होकर लंगड़ाते हुए चल रहे हैं। महात्मा बुद्ध ने पशुओं पर ऐसे अत्याचार करने से रोकना चाहा, उसने कहा सारी भेड़-बकरियां यज्ञ में मारी जाने वाली हैं। तुम मुझे क्यों रोक रहे हो। मैं इन्हें राजा बिम्बसार के यहाँ होने वाले यज्ञ में ले जा रहा हूँ। महात्मा बुद्ध उनके पीछे चलने लगे। नगर में जाकर राजा बिम्बसार को यज्ञ जैसे पवित्र कार्यों में पशुओं को मार उनकी चर्बी से आहुति देने का कारण पूछा। पुरोहित ने उत्तर दिया कि इन पशुओं से यज्ञ करने का विधान वेदों में आया है। महात्मा बुद्ध ने कहा मैं ऐसे वेदों को नहीं मानता। पण्डितों ने कहा—तुम वेदों को नहीं मानते, वह तो परमात्मा की वाणी है। बुद्ध ने कहा—मैं ऐसे परमात्मा को नहीं मानता जो वेदों द्वारा पशु हिंसा का आदेश देता है। इसके परिणाम स्वरूप महात्मा बुद्ध घोर भयंकर नास्तिक और वैदिक कर्मकाण्ड के प्रति अनास्थावान हो गए। देश का उस दिन

बड़ा दुर्भाग्य था जिस दिन सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया। बंगाल से लेकर अफगानिस्तान तक का विशाल साम्राज्य अशोक के सामने ही छिन्न-भिन्न हो गया और वेदों का नाम लेने वाला कोई नहीं रहा। ऐसे समय में आज से ढाई हजार वर्ष पहले दक्षिण में आचार्य शंकर ने जन्म लिया। आचार्य शंकर ने पुनः वैदिक धर्म की स्थापना की। देश को एकता के सूत्र में बांधने के लिए चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की। यद्यपि यह बात स्मरणीय है कि शंकराचार्य ने वैदिक धर्म की स्थापना करने और जैनियों तथा बौद्धों को शास्त्रार्थ में परास्त करनेका अनथक परिश्रम किया। लेकिन उन्होंने वेदों के स्थान पर उपनिषदों को प्रधानता दी। संभवतः उनके अपने मन में भी वेद कर्मकाण्ड के ही ग्रन्थ थे। ज्ञानकाण्ड केवल उपनिषदों को ही माना। उन्होंने अपने इस भाष्य में स्त्री और शूद्र को वेद पढ़ने के अधिकार से वंचित कर दिया। इसी प्रकार सायणाचार्य तथा उनकी पण्डित मण्डली के साथ चारों ओर वेदों का भाष्य किया लेकिन उन्होंने भी वेदों को कर्मकाण्ड से जोड़ दिया।

अन्धकार की इस घोर रात्रि में पांच हजार वर्षों के बाद वेदों के उद्धारक स्वामी दयानन्द का आविर्भाव हुआ। अपने अखंड ब्रह्मचर्य और योगसाधना के बल पर उन्होंने गुरु विरजानन्द से तीन वर्ष में ही संस्कृत व्याकरण का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया। मानो वेदों की कुंजी उनके हाथ में आ गई। चिरकाल से अपने गौरवशाली वैभव को विस्मृत कर दासता के बन्धन में पड़ी हुई आर्य जाति को गहन निद्रा से जाग्रत कर उसे वेद सूर्य का दर्शन कराया। इससे पहले पण्डित और जन साधारण समुदाय में यह मान्यता बन गई थी कि वेदों को तो शंखासुर उठा ले गया। कलियुग में भवसागर से उतरने के लिए पुराण ही एक सहारा रह गया। स्वामी जी ने लोगों को वेद दिखलाते हुए कहा, हमने प्रमादरूपी शंखासुर का वध करके जर्मनी से वेद मंगवाये हैं। वेदों का गंभीर चिंतन करके वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वेद का ज्ञान ही निर्भ्रान्त है, जिसका ज्ञान सीधा परमात्मा से ऋषियों के हृदय में सृष्टि के आदि में प्रकट हुआ, जिनमें किसी देशविशेष जाति और सम्प्रदाय का इतिहास नहीं है और मानवमात्र के कल्याण के लिए उपदेश दिया गया। जो कि आज तक विद्वान् लोग वेदों को पढ़ते और पढ़ाते हैं। ऋषि दयानन्द ने कहा, वेद नित्य और शाश्वत ज्ञान हैं। इसी को पढ़ना और पढ़ाना हमारा परम कर्त्तव्य है।

संपर्क—म० नं० 103, विजय नगर, हाँसी रोड, भिवानी

जैसा व्यक्ति का कर्म होता है, वैसा ही उसका फल यानि भाग्य होता है।

वह महामानव कौन था जिसने भगत सिंह को शहीदे आज़म भगत सिंह बना दिया?

□ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

सरदार अर्जुन सिंह के व्यक्तित्व में अद्भुत अन्तर्द्वन्द्व का समावेश हो गया था। वे परम्परा से बिल्कुल कटना नहीं चाहते थे, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर परम्पराओं की धजियाँ उड़ाने में भी पीछे नहीं हटते थे। तो बात उनकी तर्क की तुला पर खरी नहीं उतरती थी, उसको त्यागने एवं नई राह खोजने और फिर उस पर चलने का साहस उनमें था। वह आर्यसमाज के उस नियम सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहते थे। यही बुनियादी तत्त्व इनको क्रान्तिकारी बना रहा था।

अर्जुन सिंह जी केवल विचारों से ही परिवर्तनवादी नहीं थे, ऐसी बात नहीं थी। जीवन में मुख्य निर्णय लेने में उन्होंने कभी विलम्ब नहीं किया। एक बार सरकार ने वन क्षेत्र को बसाने का निर्णय लिया कि जो लोग वहाँ बसना चाहेंगे, उन्हें सरकार 25 एकड़ भूमि प्रति परिवार देगी। इस निमन्त्रण से आकृष्ट होकर वे बंगा गांव में आ बसे जहाँ भगत सिंह का जन्म हुआ।

सरदार अर्जुन सिंह के दो भाई और थे— सरदार बहादुर सिंह और सरदार दिलबाग सिंह। दोनों ने ब्रिटिश सरकार की खूब चापलूसी की और बहुत अधिक धन कमाया। वे दोनों अर्जुन सिंह को मूर्ख समझते थे और कहा करते थे कि अर्जुन सिंह ने यदि दूरदर्शिता से काम नहीं लिया तो उन्हें एक दिन भीख मांगनी पड़ेगी, परन्तु सरदार अर्जुन सिंह पर ऋषि दयानन्द जी की छाप पड़ चुकी थी। वे ब्रिटिश सरकार की चापलूसी की बात तो सपने में भी नहीं सोच सकते थे। उन्होंने आत्मसम्मान, निर्भीकता, स्पष्टवादिता और देशभक्ति के जिस मार्ग को चुना, आजीवन उसी मार्ग के पथिक बने रहे।

सरदार अर्जुन सिंह के यहाँ तीन पुत्र सरदार किशन सिंह, सरदार अजीत सिंह और सरदार स्वर्ण सिंह उत्पन्न हुए। तीनों पिता की तरह वीर, निर्भीक, देशभक्त और स्पष्टवादी थे। तीनों पुत्र साक्षात् उन्होंने के प्रतिरूप थे। इनके परिवार पर अंग्रेजों का कहर टूटता ही रहता था। श्री अजीत सिंह स्वतंत्रता के यु को आगे बढ़ाने के लिए विदेश चले गये। वहाँ (ब्राजील) से वे सन् 1947 ई० में ही लौट सके, परन्तु स्वतन्त्रता की पहली ही प्रातः (15 अगस्त, 1947 ई०) को 4 बजे उन्होंने देश के विभाजन से दुःखी होकर किसी योगी की भाँति

स्वेच्छा से शरीर त्याग दिया। भगत सिंह के दूसरे चाचा सरदार स्वर्ण सिंह भी अंग्रेज सरकार के अन्यायों से मात्र 23 वर्ष की आयु में चल बसे। सरदार किशन सिंह जी का क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस व करतार सिंह सराभा से निरन्तर सम्पर्क रहता था। इन तीनों भाइयों ने सूफी अम्बा प्रसाद, लाला हरदयाल, महाशय घसीटाराम, केदारनाथ सहगल आदि क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर भारतमाता सोसायटी की स्थापना की। इनके उग्र भाषणों व कार्यों के कारण अंग्रेजी सरकार ने तीनों भाइयों को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया।

सरदार अर्जुन सिंह जी 'सत्यार्थप्रकाश' के विरुद्ध कुछ न सुन सकते थे— सरदार अर्जुन सिंह जब ऋषि दयानन्द जी के संपर्क में आए थे, तो वे सर्वात्मना आर्यसमाज के रंग में रंगे गये। ऋषि दयानन्द जी द्वारा रचित 'सत्यार्थप्रकाश' उनके लिए एक प्रकाशस्तम्भ बन गया। उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' का पूरा अध्ययन कर लिया था। यदि कोई भी व्यक्ति सत्यार्थप्रकाश की आलोचना करता था तो वह उनसे सहन न होती थी। ऐसी ही घटना उनके जीवन में आई—एक बार सरदार अर्जुन सिंह जी अपने गांव से 60 मील दूर किसी विवाह में सम्मिलित होने के लिए गये। विवाह के अवसर पर सिक्ख पुरोहित महर्षि दयानन्द रचित 'सत्यार्थप्रकाश' के उदाहरण दे-देकर उसकी कटु आलोचना कर रहा था। अर्जुन सिंह ने देखा कि वह व्यक्ति झूठे उद्धरण सुना-सुनाकर लोगों को भड़का रहा था। अर्जुन सिंह जी ने उसे टोकते हुए कहा कि आप लोगों को मिथ्या और कल्पित उदाहरण देकर सत्यार्थप्रकाश के नाम पर सुना रहे हैं, ये बातें सत्यार्थप्रकाश में नहीं हैं। आप सत्यार्थप्रकाश को व्यर्थ बदनाम न करें। उसने कहा सत्यार्थप्रकाश लाओ, मैं सारे उद्धरण दिखा दूँ। उस समय कहीं-कहीं, कोई-कोई पुस्तक मिलती थी। पुरोहित ने सोचा कि तेरी बात ऊपर रह जाएगी। यहाँ किसके पास सत्यार्थप्रकाश मिलेगा? सत्यार्थप्रकाश के प्रति श्रद्धा रखने वाले श्री अर्जुन सिंह रात को ही 60 मील पैदल चलकर घर आये और सत्यार्थप्रकाश लेकर सवेरे तक पैदल ही वापस विवाह स्थल पर पहुँच गये। जब पुरोहित को सत्यार्थप्रकाश हाथ में थमाकर उद्धरण दिखाने के लिए कहा तो वह पुरोहित बंगले झांकने लगा। अन्ततः पुरोहित ने अपनी भूल के लिए क्षमा मांग कर ही पीछा छुड़ाया।

भाग्य तो एक बार जन्म से मिल गया, सो मिल गया। बाकी तो पुरुषार्थ कहलाता है, जो चालू जीवन में कर्म करेंगे।

जन्म से ही विद्रोही स्वभाव (वज्रादपि कठोराणि)— डॉ० सुभाष रस्तोगी जी ने अपनी पुस्तक 'क्रान्तिकारी भगत सिंह' में भी अर्जुन सिंह जी के विद्रोही स्वभाव की एक दृष्टान्त के द्वारा प्रस्तुति की है—

“यह उनके क्रान्तिकारी व्यक्तित्व का एक ज्वलन्त उदाहरण है कि उन्होंने सरकार से मिली भूमि में तम्बाकू की खेती करने का निर्णय लिया, क्योंकि यह भूमि तम्बाकू की खेती के लिए सर्वोत्तम थी। आसपास के गांवों में जहां सिक्ख नहीं थे, वहां के लोग तम्बाकी की खेती से खूब धन अर्जन कर रहे थे। इसलिए उन्होंने भी तम्बाकू की खेती करने का निर्णय ले लिया, परन्तु क्योंकि सिक्ख मत में तम्बाकू सेवन निषेध है। अतः पूरे गांव में इनका न केवल विरोध हुआ बल्कि उनको बिरादरी से निकालने की बात के साथ-साथ उनका बिरादरी से आना जाना और पानी बन्द हो गया, परन्तु सरदार जी चट्टान की तरह अपने निर्णय पर अटल रहे। तम्बाकू ऊँचे दामों में बिका और काफी धन घर में आ गया। अब सरदार अर्जुन सिंह जी ने दबंग स्वर में घोषणा की, “गुरुजी ने उस युग की परिस्थितियों के अनुकूल तम्बाकू को शिष्यों में प्रचलन को निषेध करार दिया होगा, परन्तु यदि यह पाप है तो मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूँ। अब वह घृणित वस्तु मैंने अपने घर से निकाल दी है। आप जिस तरह कहें मैं उसी तरह अपने मकान को शुद्ध करने के लिए तैयार हूँ।” इस घटना को किसी भी अर्थ में लिया जा सकता है परन्तु इससे यह तथ्य तो उजागर होता है कि अर्जुन सिंह जन्म से ही विद्रोही स्वभाव के थे। भवभूति के शब्दों में उन्हें 'वज्रादपि कठोराणि' की संज्ञा दी जा सकती है।

मृदून कुसुमादपि— 3 मार्च 1931 का दिन वह अन्तिम दिन था जिस दिन भगत सिंह अपने परिवार के सदस्यों से अन्तिम बार मिले। उस दिन भगत सिंह के पिता श्री किशन सिंह, माता श्रीमती विद्यावती, भाई कुलवीर, चाची और दादा श्री अर्जुन सिंह जी आये थे, जिन्होंने इस परिवार में ऋषि दयानन्द जी की प्रेरणा से क्रान्ति का बीज बोया था।

सरदार अर्जुन सिंह भगत सिंह के पास जैसे-तैसे साहस बटोरकर आये और भगत सिंह के सिर पर उसी प्रकार हाथ फेरने लगे जैसे बचपन में स्नेहवश फेरा करते थे। उन्होंने उस समय बोलने का पूरा प्रयास किया, परन्तु कण्ठ अवरुद्ध हो गया और मुख से एक भी शब्द न निकला। वे सोच रहे थे संभवतः इसके पश्चात् इस प्रिय शिष्य भगत सिंह का मुख देखने का अवसर नहीं मिलेगा। वे परिवार से दूर जाकर खड़े हो गये। भगत सिंह ने देखा कि दादा जी जितना भी आंसुओं

को छिपाने का प्रयास कर रहे थे, उतने ही वेग से वे निकल जाना चाहते थे। भगत सिंह ने स्वयं को संयत करते हुए कहा था—दादाजी! आपने तो मुझे बहुत समय पूर्व मेरे यज्ञोपवीत के समय राष्ट्र को दान कर दिया था, फिर आज उस दान दी हुई सम्पत्ति को अलग करने में यह मोह कैसा? आप जैसा व्यक्ति, जो वज्र की तरह कठोर है, वह 70.71 मुरझाए हुए फूलों की तरह अच्छा नहीं लगता। मुझे लगता है कि अब आप बूढ़े हो गये हैं, क्योंकि आपके आंसू इस बुढ़ापे को दर्शा रहे हैं, परन्तु मुझे विश्वास है कि आप ऋषि दयानन्द के शिष्य हो। ऋषि दयानन्द जी ने मृत्यु से कुछ क्षण पूर्व कहा था, “हे ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने बड़ी अच्छी लीला की।” उनके शिष्य कभी ध्वराया नहीं करते। इस प्रकार परिवार का यह अन्तिम मिलन था उसके पश्चात् 23 मार्च, 1931 को इस शहीदे आजम भगत सिंह को फांसी दे दी गई और अंग्रेज सरकार ने अपने नाम एक काला अध्याय और जोड़ दिया।

भगत सिंह अपनी प्रत्येक बात अपने दादा श्री अर्जुन सिंह से किया करते थे। 14 नवम्बर, 1921 को केवल 14 वर्ष की आयु का भगत सिंह अपने दादा श्री अर्जुन सिंह को एक पत्र लिखता है—परिवार का हालचाल जानने के पश्चात् वह अपनी सक्रियता को दादाजी के साथ किस प्रकार बांटता है उसका उदाहरण पत्र की ये पंक्तियाँ हैं—

मेरे पूज्य दादा साहब जी,

नमस्ते।

“आजकल रेलवे वाले हड़ताल की तैयारी कर रहे हैं। उम्मीद है कि अगले सप्ताह के बाद जल्दी शुरू हो जायेगी।” **आपका ताबेदार (सेवक)—** भगत सिंह

दादाजी को लिखे इस पत्र से पता चलता है कि उस समय चल रहे चर्चित असहयोग आन्दोलन का प्रभाव किस तरह जनता में जोर मार रहा था, जिसका प्रभाव भगत सिंह पर भी हुआ। वे उससे अनजान न रह सके। साथ ही दादाजी को भी यह बताए बिना न रह सके कि जल्दी आरम्भ होने वाली रेल-हड़ताल की भी उन्हें सूचना है। वे अपनी पूरी गतिविधि के बारे में अपने दादा श्री अर्जुन सिंह जी को अवगत कराते रहते थे। इससे सिद्ध होता है कि भगत सिंह के विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन का कितना श्रेय सरदार अर्जुन सिंह जी को है। यही श्री अर्जुन सिंह जी ही हैं जिन्होंने भगत सिंह को शहीदे आजम भगत सिंह बना दिया था।

संपर्क-4/44, शिवाजी नगर, गुरुग्राम,

चलभाष-09911197073

पुरुषार्थ अच्छा है, तो भविष्य भी अच्छा होगा और पुरुषार्थ खराब है, तो भविष्य भी खराब होगा।

वेदव्याख्या की अपेक्षा और सहायक तत्त्व

□ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

यह सर्वसम्मत सिद्धान्त है कि संस्कृत भाषा और उसका साहित्य प्राचीनतम है और वेद उसके मूलग्रन्थ हैं। क्योंकि संस्कृत वाङ्मय के सभी विधा तथा विषयों की रचनायें अपने-अपने विषय का मूल वेदों को ही स्वीकार करती हैं और वेदों को परम प्रमाण मानती हैं। अतः 'सर्व वेदात् प्रसिध्यति' 12,97 जैसे मनु वचन सर्वथा सार्थक हैं। वेदों की यह सर्वमान्य तथा विविध विषय सम्पन्न वाली स्थिति होने के कारण वेदों की व्याख्या सर्वगम्य, सर्वसुलभ रूप में सामने आनी ही चाहिए। निःसन्देह वेदव्याख्या की दृष्टि से वैदिक साहित्य के ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदांग, उपांग, वेदभाष्य आदि के रूप में प्रत्यक्ष तथा दर्शनशास्त्र जैसे अप्रत्यक्ष रूप में प्रारम्भ से ही अनेकविध प्रयास हुए हैं, पुनरपि इनको सर्वजन बोध्य नहीं कहा जा सकता।

संस्कृत के शब्द—संस्कृत भाषा के अधिकतम शब्द धातु-प्रत्यय के मेल से बनते हैं। अतः आख्यातज तथा यौगिक, योगरूढ कहलाते हैं। वेदों में यत्र-तत्र प्राप्त इन्द्रतम, शिवतर जैसे शब्द (ज्योंकि नामपद के साथ तर, तम प्रत्यय नहीं लगता, वे तो गुणवाचक के साथ ही प्रयुक्त होते हैं) और दासपत्नी जैसे शब्दों का जल का विशेषण होना भी वैदिक शब्दों की यौगिकता को परिपुष्ट करते हैं। इससे वेदव्याख्या का कार्य सरल होना चाहिए। सहस्रशः व्यक्तियों ने विविध भाषाओं में वेदव्याख्या की दृष्टि से अनथक प्रयास किया है। वेदव्याख्या के क्षेत्र में आध्यात्मिक, आधिदैविक, ऐतिहासिक आदि विविध रूप परस्पर विरुद्ध रूप में भी मिलते हैं। इससे स्वतः सिद्ध हो जाता है कि आज भी वेदव्याख्या की जरूरत है, जो कि सर्वमान्य तथा सर्वजनबोध्य हो।

व्याख्या की अपेक्षा—किसी मूल ग्रन्थ की व्याख्या की अपेक्षा विशेषतः उसके महत्त्वपूर्ण होने से होती है। तब उसके प्रति श्रद्धाजन्य जिज्ञासा व्याख्या का प्रथम कारण होती है। यत्र-कुत्रचित् सन्देह, परस्पर विरोध, असंगति प्रतिभासित होने पर उस-उस के निवारण, स्पष्टीकरण के लिए भी व्याख्या की आवश्यकता सामने आती है। हां, आज प्रचार-प्रसार के युग में अपने धर्मग्रन्थ को जन-जन

के हाथों में पहुंचाने के लिए वेद-व्याख्या की आवश्यकता और भी अधिक हो जाती है।

व्याख्या की प्रवृत्ति—किसी ग्रन्थ के अध्ययन-अध्यापन का प्रचुर प्रचार-लगाव, श्रद्धा, जिज्ञासा, उपयोगिता के कारण होता है। यतोहि 'जहां चाह-वहां राह' की उक्ति सर्वविदित ही है। पुनरपि व्यावहारिक जीवन में जिसकी जितनी अपेक्षा, मांग होती है, उतनी ही उसके साथ सम्पर्क भावना, जिज्ञासा बलवती होकर सामने आती है। आज के भौतिकवाद से प्रभावित युग में व्यावहारिक जीवन की दृष्टि से किसी की कहां, कितनी उपयोगिता, अपेक्षा है? यह बात किसी के फैलाव का एक विशेष आकर्षण बन रही है और यह भावना वेद के प्रति भी उभर रही है। तभी तो हम देखते हैं कि चाहे संस्कृत भाषा की उच्चतम कक्षाओं के पाठ्यक्रम में वेद का कुछ अंश निर्धारित है। पर वहां के अध्येताओं की संख्या अपनी कहानी आप कह रही है। उस में भी पढ़ने वालों की प्रवृत्ति पाठ्यक्रम, परीक्षा की दृष्टि से ही होती है।

वेदव्याख्या के सहायक तत्त्व—किसी के धर्मग्रन्थ होने से उस धर्म के मानने वालों से उस ग्रन्थ का सम्पर्क बढ़ जाता है। जिससे धर्मग्रन्थ का महत्त्व स्वतः द्विगुणित हो जाता है। भारतीय संस्कृत साहित्य के सारे ग्रन्थ निर्विवाद रूप से वेद को धर्मग्रन्थ स्वीकार करते हैं। तभी तो ऐसे वचन दृष्टिगोचर होते हैं कि—'धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः' मनु० 2.13 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' मनु० 2.6 अर्थात् धर्म को जानने की चाहना वालों के लिए वेद सबसे अधिक सहायक, परम प्रमाण है तथा वेद में धर्म का सर्वांगीण परिचय प्राप्त होता है। ऐसे ही भाव मीमांसा दर्शन, गौतमधर्मसूत्र आदि में भी अपने-अपने शब्दों में अभिव्यक्त किए गए हैं। हां, धर्म शब्द साहित्य में स्वभाव, कर्तव्य, नियम, आचार, ढंग, अपूर्व, पुण्य, धार्मिक कर्मकाण्ड आदि अनेक अर्थों में आता है। धर्म शब्द सबसे अधिक धार्मिक कर्मकाण्ड के लिए प्रयुक्त होता है। ऐसे धार्मिक कर्मकाण्ड के लिए वेदों का महत्त्व अनेकत्र चर्चित हुआ है। इसीलिए धार्मिक कर्मकाण्ड के यज्ञों, पूजा-पाठों, जप-

पुरुषार्थ से ही भाग्य बनता है।

स्मरण, स्नान, विविध तीर्थों, व्रतों, पर्वों के अवसर पर वेदमन्त्रों का प्रयोग हम प्रतिदिन देखते तथा करते हैं।

वेद और यज्ञ-संस्कृत साहित्य में एक मान्यता यह भी मिलती है कि मूलतः वेदों का प्रादुर्भाव यज्ञों के लिए ही हुआ है। तभी तो यह कहा जाता है—'दुदोह यज्ञसिध्यर्थमृग्यजुःसामलक्षणम्' मनु० 1.23 अर्थात् ऋग्यजु, साम नामक वेदों का प्रकाश यज्ञ सिद्धि के लिए ही हुआ है। इसी भावना को वेदांग ज्योतिष में इन शब्दों में प्रकट किया है—'वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः' तथा गीता के 'कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि' 3.15 शब्दों का भी यही भाव है।

वेदों में अनेक प्रकार के यज्ञों के नाम, यज्ञ प्रक्रिया का सामान्य संकेत, यज्ञीय फलों का विधान जहां है, वहां यज्ञों में विनियुक्त मन्त्रों के वेदविशेष रूप से आगार हैं। वेदों में यज्ञ धातु के नामपद तथा क्रियापद सहस्र से कम नहीं हैं।

यज्ञ धातु से बनने वाले नाम पदों तथा क्रियापदों का प्रयोग विशेष रूप से अग्नि में दी जाने वाली आहुतियों से सम्पन्न होने वाले कर्म के लिए हुआ है। निरुक्तकार ने इस सम्बन्ध में लिखा है—प्रख्यातं यजतिकर्म, यजुरुक्तो भवतीति वा-यजूंषि-एनं नयन्तीति वा, 3.4 अर्थात् यज्ञ धातु से अभिप्रेत क्रियाकलाप बहुत ही प्रसिद्ध है, यजु (मन्त्रों) के आधार पर यह प्रक्रिया सम्पन्न होती है। वेदमन्त्रों में यज्ञ धातु का अन्य अर्थ में प्रयोग कम है, पर हुआ अवश्य है। जैसे कि—आ हि ध्या सूनवे पिता, आपिर्यजति—आपये-ऋग्वेद 1,26,3 में पिता पुत्र के और बन्धु बान्धव के कर्तव्य कर्म का निर्वाह करने की भावना को यजति क्रियापद से संकेत करते हुए प्रतीत होते हैं। यजुर्वेद के 18वें अध्याय में 1 से 31 तक के मन्त्रों में 'यज्ञेन कल्पन्ताम्' की टेक है। जिनमें व्यवहार्य वस्तुओं पशुओं अन्नों आदि के नाम हैं। अतः यहां यज्ञ शब्द इन विधाओं का ज्ञापक है।

यज्ञ कर्म में वेदमन्त्रों के प्रयोग की दृष्टि से यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि वहां ऐसे धार्मिक कर्मकाण्ड के यज्ञों में वेदमन्त्रों का उच्चारण मात्र ही पुण्यदायक, यज्ञपूरक माना गया है। ऐसी स्थिति और मान्यता में वेदव्याख्या की प्रवृत्ति का पुष्पित-फलित होना स्वतः कम हो जाता है। क्योंकि यज्ञ एक धार्मिक कर्मकाण्ड है, अतः यज्ञ प्रक्रिया का ऐसा अपेक्षित रूप वेदों में वर्णित हुआ है, वहां यज्ञ में

यथाप्रसंग इष्ट की स्तुति, इष्ट से प्रार्थना वाले मन्त्र अपने-अपने विनियोग के अनुरूप वेदों में विशेष रूप से प्राप्त होते हैं। यह सारा यज्ञ का प्रसंग उच्चारण से अधिक सम्बद्ध है तथा यज्ञ की प्रक्रिया का अधिकतम रूप कर्मकाण्डात्मक होता है। अत एव ऐसे वेदमन्त्रों की व्याख्या स्वतः सीमित हो जाती है। जैसा कि ब्राह्मणों, आरण्यकों में विशेष रूप से प्रत्यक्ष होता है और कल्पसूत्रों, अनुक्रमणी साहित्य में तो मन्त्रों के विनियोग मात्र का ही निर्देश है। निःसन्देह वेदों में यज्ञों का विस्तृत वर्णन है, अत एव आध्यात्मिक व्याख्यान पद्धति अन्य प्रवृत्तियों से अधिक प्रकाश में आई है।

वेद तथा आचरण पक्ष—जैसे कि पूर्व लिखा गया है कि शास्त्रों में धर्म शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है और उन में से आचरण वाला पक्ष, अर्थ सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। तभी तो कहा है—'आचारः परमो धर्मः' (मनु० 1.108) अर्थात् धर्म के अन्य रूपों की अपेक्षा आचार=आचरण अधिक महान्, महत्त्वपूर्ण है। अतः इससे किसी को भी मतभेद नहीं है कि वेदों में शतशः मन्त्र ऐसे भी हैं, जिन में व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन के आचरण पक्ष का भी विवेचन प्राप्त होता है। आचरण पक्ष का प्रतिपादन करने वाले वेदमन्त्रों की व्याख्या में ही विचार तथा विस्तार का अधिक अवकाश रहता है। वहां शब्द विचार के साथ भावों के विश्लेषण की भी आवश्यकता होती है। जैसे कि—

स्वस्तिपन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।

पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि॥ (ऋ० 5.51.15)

इस मन्त्र के शब्दार्थ के साथ भौतिक रूप से यह भी विचार्य हो जाता है कि स्वस्ति के पथ पर सूर्य तथा चन्द्रमा व्यक्तिगत रूप से और परस्पर मिलकर ये कैसे-कैसे चलते हैं? तथा हम किस-किस प्रकार से उनका अनुकरण कर सकते हैं? द्वितीय पंक्ति में आए संगमेमहि क्रियापद के साथ पुनर्ददता, अघ्नता, जानता का किस-किस प्रकार से सम्बन्ध है? इस प्रकार वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन के व्यावहारिक पक्ष को अनेक मन्त्रों में विश्लेषित किया गया है। जिसको स्पष्ट करने के लिए व्याख्या की अपेक्षा होती है।

इसी प्रकार आन्तरिक जीवन की दृष्टि से वैचारिक स्तर पर व्यक्ति अपने आप से बात करने वाली स्थिति में होता है। इसी को सामने रखकर— क्रमशः पृष्ठ 13 पर.....

संसार में कर्म को करने वाले जीव हैं और फल को देने वाला ईश्वर, समाज, राजा आदि हैं।

जहाँ से आरम्भ किया था

□ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

ऋषि दयानन्द जी ने अपने उग्र तप से अविद्या, अज्ञान, भ्रान्तियों, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के तिमिर को छिन्न-भिन्न कर सत्यार्थ प्रकाश किया था। ऋषि ने सारे वार अकेले सहकर अविचल रहकर सत्य का मण्डन और असत्य का खण्डन करके वैदिक धर्म को आलोकित किया। ऋषि जी के बाद उनके जैसा बल, बुद्धि, सामर्थ्य तो कहाँ, लेकिन श्रद्धा से भरे श्रद्धानन्द, गुरुदत्त, लेखराम जैसे धर्मवीरों ने, पं० रामचन्द्र देहलवी, पं० शान्तिप्रकाश, स्वामी दर्शनानन्द आदि शास्त्रार्थ महारथियों ने, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, मेहता जैमिनी जैसे भूमण्डल प्रचारकों ने, पं० चमूपति व पूज्य गंगाप्रसाद उपाध्याय जैसे लेखकों ने ऋषि की विरासत आर्यसमाज को सफल रूप से संभाला। इनके समय के प्रचारकों, उपदेशकों, भजनोपदेशकों के सामने जो कठिनाइयाँ थीं, लोगों के सवाल-जवाब थे, विरोधियों के आक्षेप थे, साधनों के अभाव थे, इन सबने अपने तप व श्रद्धा द्वारा इन सब कठिनाइयों को अपनी आगामी पीढ़ी के लिए दूर कर दिया।

हम उस बने बनाए वातावरण का लाभ न उठा सके और हमने स्थिति वैसी ही बना दी जैसे आरम्भ में थी। अब इन परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए पूर्वजों जैसा स्वाध्याय, त्याग, तप, श्रद्धा कहाँ? इससे ही पता चलता है कि स्थिति कितनी विकट है? हमने गांव-गांव घूमकर प्रचार करके देखा है। लोग आर्यसमाज पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं। यह कहते हैं कि आर्यसमाज में घर से भागे हुए समगोत्र के युवक-युवतियों का भी विवाह होता है। इतिहास प्रदूषण फिर फैल गया है। लोग कहते हैं कि श्री राम ने सीता को छोड़ दिया था। इधर रामपालदास ने आर्यसमाज के गढ़ रोहतक (हरयाणा) में अपना विशेष मायाजाल फैला दिया है। आरक्षण की आड़ में उस किसान को आर्यसमाज से दूर करने का प्रयास किया है जो आर्यसमाज का केन्द्र रहा है।

अभी 9 जून 2017 को रोहतक में इसने भण्डारे की आड़ में जो पोपलीला की उसमें आरक्षण मांग करने वाले स्थानीय कुछ नेताओं ने भी भाग लिया व उनके कारण कुछ

स्थानीय ग्रामीणों ने भी भाग लिया। वहाँ इसने जो पुस्तकें बंटवाई उनमें से एकाध पर मैंने दृष्टि डाली, वही भूत-प्रेत, वेद में कबीर खोजना, रामपालदास को अवतार, परमात्मा बताना और क्या मिलना था? यहाँ लोगों की जिन शंकाओं का मैंने वर्णन किया है या कुछ लोग जो हठ, दुराग्रह, स्वार्थ के कारण यह सब पाल रहे हैं, उसका उत्तर मेरे पास भी है और आपके पास भी। लेकिन समस्या है गांव-गांव खुले प्रचार करने की। वही समय की आवश्यकता आन पड़ी है, जब आर्यसमाज का छोटे से छोटा कार्यकर्ता स्वयं मुनादी (घोषणा) करके नियत स्थान पर व्याख्यान प्रचार भी स्वयं ही करता था। ऐसा करके ही हम उस पाप के प्रायश्चित्त से बच सकते हैं, जो हमने आलस्य के चलते आर्यसमाज की शान, शक्ति व शोभा को घटाकर दिया है। आर्यसमाज के भवनों को छोड़कर गांव-गांव निकलना होगा।

आरक्षण मांग के जिन नेताओं ने रामपालदास का साथ दिया है क्या वे यह चाहते हैं कि उनकी आने वाली पीढ़ियाँ रामपालदास को परमात्मा माने, वे खूब पाप करें, क्योंकि रामपालदास पापों को क्षमा करने का ठेका लेता है, क्या वे चाहते हैं कि हमारे युवा यज्ञ, ब्रह्मचर्य, योग के स्थान पर वेद में आए 'कवि' शब्द को 'कबीर' बताकर मात्र इतनी खोज करें? इन अक्ल के दुश्मनों को कौन समझाये कि 'कबीर' शब्द अरबी भाषा का है, संस्कृत शब्दकोष में यह शब्द कहाँ? और भी इस पर चर्चा हो सकती है, लेकिन यहाँ यही मूल विषय नहीं है।

हरयाणा के किसानों ने आर्यसमाज के साथ मिलकर स्वतन्त्रता आन्दोलन, हैदराबाद सत्याग्रह, हरयाणा निर्माण, हिन्दी सत्याग्रह में तो अग्रणी रहकर भाग लिया ही साथ ही गुरुकुल, गोशालाओं में सहयोग देकर संस्कृत-संस्कृति की रक्षा में भी महती भूमिका निभाई। 'समगोत्र' विवाह का जब प्रसंग चला तो डॉ० रामप्रकाश जैसे आर्यविद्वानों ने सर्वखाप पंचायत की शास्त्रीय प्रमाणों के आधार पर सहायता करके इसे अनुचित सिद्ध किया। यदि कुछ ऐसे विवाह

क्रमशः पृष्ठ 13 पर.....

एक बार पैदा हो गये तो अब बाद का भविष्य पहले से बना हुआ नहीं होता है। जब हम कर्मों से उसका निर्माण करते हैं, तब जाकर वह बनता है।

'अन्तिम संस्कार और पर्यावरण' विषयक लेख ऐसी भी हैं वैदिकसिद्धान्तसिक्त सन्तानें

□ प्रियवीर हेमाङ्गना मो० 07503070674

सुप्रसिद्ध कर्मयोगी समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने निर्वाण से पूर्व ही जो वसीयतनामा लिखकर अपनी स्थानापन्न परोपकारिणी सभा को दिया था उसमें उन्होंने जहां अन्य बातें लिखी थी वहाँ अपने अन्त्येष्टि संस्कार के बारे में भी स्पष्ट यह लिखा था—

“जैसे इस सभा को मेरी और मेरे सब पदार्थों की यथाशक्ति रक्षा और उन्नति करने का अधिकार है, वैसे ही उसे मेरे मृतक शरीर के संस्कार का भी है। वह न तो गाड़ा जाय, न जल प्रवाह किया जाय और न जंगल में फेंका ही जाय। ‘संस्कारविधि’ में वर्णित वेदविहित विधि से वेदी बनाकर वेदमंत्रों से शव को भस्म किया जाय। वेदविरुद्ध कुछ भी न किया जाय। भस्म खेत में डाल दी जाय।”

महर्षि जी की उक्त इसी अभिलाषा के अनुरूप ही उनका अन्त्येष्टि संस्कार उनके भक्तों द्वारा किया गया था और उनके अस्थि-अवशेषों को अजमेर स्थित शाहपुरा के बाग की भूमि (खेत) में ही मृत्तिकासात् किया गया था।

ऊपर के इस उद्धरण को देने का अभिप्राय यह ही है कि जैसी विधि अपने अन्त्येष्टि संस्कार के विषय में आचार्य प्रवर श्री महर्षि दयानन्द जी महाराज ने लिखी थी, वैसी ही वैदिक विधि से अन्त्येष्टि संस्कार करना पूर्णतः सर्वश्रेष्ठ है। इसी विधि को व्यवहार क्षेत्र में उतारना आज के समय में आवश्यक ही नहीं अत्यावश्यक है, क्योंकि यही विधि बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने में सहायक बनेगी, ऐसी मेरी धारणा है। पर्यावरण को शुद्ध-स्वच्छ रखना हम सब ही का सामाजिक दायित्व है। पर्यावरण बचेगा तो हमारा अस्तित्व बचेगा, अन्यथा हमारा और हमारी आने वाली पीढ़ी का विनाश निश्चित है। निकट भविष्य में पर्यावरण प्रदूषण के भयंकर परिणाम होंगे ही। पर्यावरण को शुद्ध तथा स्वच्छ बनाकर ही स्वस्थ एवं बलिष्ठ नागरिक सुखी, शान्त तथा आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

ऐसा नहीं कि महर्षि जी द्वारा बताई गई विधि से अन्त्येष्टि संस्कार करने वाले आज नहीं हैं, हैं और अवश्य हैं, जिसका केवल एक ही उदाहरण देना पर्याप्त समझूंगा जिसकी जानकारी मुझे अर्थात् इन पंक्तियों के लेखक को है। अभी पिछे उत्तर प्रदेश राज्य के अन्तर्गत बागपत जनपद के उसी ऐतिहासिक स्थान ‘वारणावत’ (बरनावा), जहाँ पाण्डवों को

जलाने के लिए दुर्योधन ने लाक्षागृह बनवाया था, के पास फजलपुर सुन्दर नगर नामा गांव में संस्थापित आर्यसमाज के मन्त्री श्री विनोद कुमार आर्य के पूज्य पिता श्री आशाराम जी का अन्त्येष्टि संस्कार पूर्णतः वेदविहित विधि से ही आर्य सन्तानों ने 18 नवम्बर 2016 को खेत में किया।

दाहकर्म के तीसरे दिन 20 नवम्बर को आर्य पुरुषों ने खेत में जाकर, चिता से अस्थिसंचय कर, उसी खेत में अस्थि अवशेषों को गड्ढे में डालकर पार्थिव अंशों में तो विलीन किया ही वहीं श्रद्धापूर्वक एक पौधा भी आरोपित कर दिया जिससे जगत् का वातावरण शुद्ध होता रहे। भस्म भी खेत में ही बिखेर दी गई।

धन्य हैं ऐसी वैदिकसिद्धान्तसिक्त सन्तानें जो अपने सर्वश्रेष्ठ वैदिक सिद्धान्तों एवं परम्पराओं को व्यवहार-क्षेत्र में निष्ठापूर्वक उतार रही हैं और पर्यावरण के संरक्षण के सम्बन्ध में प्रेरणा की स्रोत भी बन रही हैं सो भी एक अच्छे पिता से मिले अच्छे संस्कारों के कारण से ही। किम् बहुना? अगर संस्कार-पद्धति के रहस्य को समझकर हर माता-पिता प्रण कर ले कि वे सन्तान में ऐसे ही संस्कारों का आधान करेंगे जिससे वे उनसे भी उत्कृष्ट कोटि के हों, तो हर बीस-पच्चीस साल के बाद एक नई ही सुसंस्कृत पीढ़ी का, एक नये ही सुसंस्कृत युग का आगमन होगा ही। जैसी सन्तानें होंगी वैसा युग होगा ही। माता-पिता तथा समाज के मस्तिष्क को बदलकर ही हिटलर ने बीस बरस मात्र में ही एक अद्भुत सुसंस्कारी युवापीढ़ी का निर्माण कर दिया था। यह नई पीढ़ी उन ही विचारों, संस्कारों का मूर्तरूप थी जो जर्मनी के एक कोने से दूसरे कोने तक एक लहर की तरह ही बहने लगी थी।

काश! कहीं इस अपने आर्यावर्त देश में भी कश्मीर से कन्याकुमारी तक ऐसी ही सुसंस्कारी अद्भुत सन्तानें दिखाई पड़े और इसका जगद्गुरुत्व पुनः अपने स्वाभाविक और पुरातन स्वरूप में आ जाये और वैदिक आर्य संस्कृति-सभ्यता अपने पुरातन गौरवमय स्वरूप को धारण कर विश्व का पथ-प्रदर्शन कर सके। ईश्वर हमारे राष्ट्रनायकों को इस सम्बन्ध में सुमति प्रदान करे-समीचीन वैसी ही जैसी कभी हिटलर महान् को प्रदान की थी।

संपर्क-318, विपिन गार्डन, नई दिल्ली-110059

जैसा संकल्प होता है, वैसा ही व्यक्ति बोलता है। जैसा व्यक्ति बोलता है, वैसा ही कर्म होता है।

पर्यावरण की रक्षा करें

□ डॉ० बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा (उ.प्र.)

हमारे चारों ओर जो वातावरण प्रकृति ने दिया है वही हमारा पर्यावरण है। नदियों में मधुर, शीतल, स्वच्छ, निर्मल, कल-कल का स्वर करता हुआ बहता जल, सुन्दर ऊँचे-ऊँचे पर्वत वन जंगल वहाँ हरियाली घास, लता, पुष्प, गोल लम्बे घने वृक्ष, गांव व नगरों में बड़े-बड़े ऊँचे-नीचे मैदान बाग-बगीचे वृक्षों पर चहचहाती चिड़ियाएँ वह भी पीली काली सफेद नीली विभिन्न आकार प्रकार की एक स्वर में संगीत जैसा मनमोहक स्वर निकालने वाली बया चिड़िया जिनके घोंसले शक्वाकार ताम्बूल के आकार के जंगलों में कीकर छौंकरा करील खजूर आदि वृक्षों पर लटके हुए उनमें चिड़ियों का मुख्य दरवाजा अन्दर अलग-अलग सुन्दर कमरे जैसे आज तालाबों में बत्तख खेतों में सारस जंगलों में हिरनों के झुंड यही तो है पर्यावरण जहाँ सुन्दर वायु बहती हो, पक्षियों मोर चकोर कोयल की मधुर ध्वनि सुनायी देती हो, वही हमारा पर्यावरण है। यही ईश्वर की विचित्र रचना है।

सत्यतः पर्यावरण से मानव व अन्य प्राणियों का सदैव से अटूट सम्बन्ध रहा है। मनुष्य पर्यावरण में ही सुखी रह सकता है। हम पर्यावरण में ही श्वास लेते हैं। वायु शुद्ध स्वच्छ है तो हमें ऑक्सीजन पूरी मिलेगी। हमें उससे शक्ति प्राप्त होगी। भूमि का जल, सरिता का जल, नदी का जल, झरने का जल, झीलों का जल यदि शुद्ध है तो हमारा स्वास्थ्य भी अच्छा होगा। पेड़-पौधे वृक्ष आदि वनस्पतियाँ चारों ओर हरियाली आंखों से देखने में सुन्दर लगती हैं, कानों को पक्षियों का कलरव प्रिय लगता है और चारों ओर का वातावरण जहाँ प्रातःकाल की बेला में स्वर्णिम आभा लिये स्वर्ण के थाल सदृश उदय होता सूर्य कितना सुन्दर लगता है और प्रतिदिन सायंकाल में अस्त भी होता है।

पर्यावरण से हमारा सीधा सम्बन्ध है। पर्यावरण अच्छा है तो हमारा जीवन अच्छा है। हम स्वस्थ रहेंगे और यदि पर्यावरण विकृत है तो हमारा स्वास्थ्य हमारा जीवन ठीक प्रकार नहीं रह सकता। पर्यावरण का हमारे स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

वैज्ञानिकों ने देखा है कि धरती का पर्यावरण विकृत हो रहा है। पर्वतों का कटान हो रहा है, वन कट रहे हैं, जंगलों

का स्थान ऊँचे-ऊँचे फ्लैटों ने ले लिया है। जहाँ सुन्दर वायु बहती थी वहाँ कारखानों ने चिमनियों द्वारा विषाक्त गैसों छोड़ी जा रही हैं। इन गैसों में सभी जानलेवा बीमारियों को उत्पन्न कर रही हैं। हाइड्रोजन, सल्फाइड, नाइट्रस ऑक्साइड, सल्फर डायऑक्साइड सल्फ्यूरिक एसिड की वाष्प, इन कारखानों से निकलकर वातावरण को जहरीला कर जल वायु मृदा प्रदूषण से हमारे शरीर व स्वास्थ्य को नष्ट कर रही हैं, उधर विस्फोटक बारूद का प्रयोग कृषि में रासायनिक उर्वरक कीटनाशक और वाहन कारखानों से ध्वनि (स्वर) प्रदूषण बढ़ रहा है जिनसे हृदय, त्वचा, श्वसन-तंत्र, आंख, नाक, गले के रोग, थायरॉयड, शुगर, उच्च रक्तचाप, मानसिक रोग, अनिद्रा, बेचैनी, थकावट तथा कैंसर जैसे रोग बढ़ते जा रहे हैं।

आज पर्यावरण विकृत हो रहा है। बढ़ती जनसंख्या और उसमें भी सामान्य जन की बढ़ती आवश्यकताएँ जिनके कारण लकड़ी के लिये वृक्ष व जंगल कट रहे हैं। भवन निर्माण हेतु पर्वत कट रहे हैं, भवन बन रहे हैं, इसलिए जंगल समाप्त हो रहे हैं। आज गौरैया जैसी घरेलू चिड़ियाएँ दिखायी नहीं देती, गिद्ध समाप्त-प्रायः हो चुके हैं। चील, सारस, बत्तख, जैसे अनेक पक्षियों पर इसका कुप्रभाव पड़ा है। जंगलों में जो जीव-जानवर रहते थे वह भी समाप्त-प्रायः होते जा रहे हैं। आज गौरैया जैसी घरेलू चिड़ियाएँ दिखाई नहीं देती, गिद्ध समाप्तप्रायः हो चुके हैं, चील, सारस, बत्तख जैसे अनेक पक्षियों पर इसका कुप्रभाव पड़ा है। जंगलों में जो जीव जानवर रहते थे, वह भी समाप्तप्रायः होते जा रहे हैं, झीलें-बाग-कूएँ नष्ट होते जा रहे हैं। जंगलों में कॉलोनी बन गई, वहाँ वृक्षों के स्थान पर बड़े-बड़े मोबाइल, टी.वी. आदि के टावर दिखाई देते हैं। इंटरनेट मोबाइल का विकिरण चारों ओर बढ़कर गर्भ स्थित शिशुओं में विकृतियाँ पैदा कर रहा है। विकिरण से मानसिक रोग जैसे शिरःशूल, हृदयरोग, अनिद्रा, बेचैनी, अशक्तता, नपुंसकता जैसे रोग जन्म ले रहे हैं।

आकाश में उपग्रहों का जमावड़ा भी प्रदूषण है। धरती पर चारों ओर ओजोन की पर्त है, जिसमें छेद होकर

हमारा कहा गया अच्छा-बुरा शब्द, मन का विचार और किया गया शारीरिक कर्म ही हमारे भाग्य का निर्माण करता है।

विकिरण शरीर पर अत्यन्त हानि पहुँचा रहे हैं। विकिरणों (Radiations) से त्वचा झुलस जाती है, मस्तिष्क हृदय रोग हो जाते हैं। ग्लोबल वार्मिंठा से अफ्रीका ऑस्ट्रेलिया जैसे क्षेत्रों में अधिक प्रभाव बढ़ा है। वहाँ दोपहरी में घर से बाहर नहीं जा सकते। सीधी पड़ने वाली किरणें शरीर में विकृति उत्पन्न करती हैं।

पर्यावरण की विकृति से चारों ओर मानव व प्राणिजगत कष्ट में हैं। हमें आज पर्यावरण पर विशेष ध्यान देना चाहिए। प्रत्येक राष्ट्र में पर्यावरण का एक अलग विभाग हो, जिसे आयुर्वेद व वनस्पति विभाग से सम्बद्ध किया जाए। पर्यावरण मंत्रालय हों जो एक-दूसरे से सम्बद्ध रहें तो जिन-जिन कारणों से पर्यावरण पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है उन की समीक्षा कर नियम स्थापित किये जायें।

वनों का कटान बन्द हो, नदियों को प्रदूषण से बचायें, कारखानों से निकलने वाली जहरीली गैसों को समाप्त करने हेतु विकल्प खोजा जाय बढ़ते यातायात से प्रदूषण पर पूर्ण नियन्त्रण हो, कोलाहल बन्द हो, टी.वी., टावर, एन्टीना मोबाइल टावरों से विकिरण का समाधान निकाला जाय। चारों ओर औषध, पुष्प, फल, लता, वृक्ष लगाये जायें। विद्यालय, घर-मकान, सड़क, खेत-खलिहान सर्वत्र घने पौधे, वृक्ष आदि हों, प्रदूषण पर पूर्ण नियन्त्रण हो। चारों ओर पुष्प लता आदि लगाकर हम पर्यावरण को शुद्ध व मनोहारी बना सकते हैं।

पर्यावरण को विकृत करने में, प्रदूषण बढ़ाने में आज पोलिथीन का अधिक प्रयोग होना भी एक कारण है। नगरों, महानगरों यहाँ तक कि ग्रामों में भी आज सर्वाधिक पोलिथीन का प्रयोग हो रहा है। घरों में, कार्यालयों में प्लास्टिक व पोलिथीन पर पूर्ण प्रतिबन्ध होना चाहिए। आज नगरों में नाले-नालियां पोलिथीन से अटे पड़े रहते हैं जिस पर नगर प्रशासन का ध्यान नहीं जाता जबकि घरों में प्लास्टिक पोलिथीन का प्रयोग प्रदूषण को तो बढ़ा ही रहा है इससे सर्वाधिक कैंसर, एलर्जी, थायरायड, यकृत व मूत्र रोग बढ़ रहे हैं जो कि मानव के लिए यह पोलिथीन प्लास्टिक अत्यन्त घातक है।

आइये आज की गम्भीर समस्या पर्यावरण का विकृत होना है, पर्यावरण की रक्षा-सुरक्षा करें और मानव व प्राणी के जीवन को खतरों से बचायें।

ओ३म्

दुःख के नाना बोल हैं, सुख के हैं दो बोल।
सच्चा जीवन सादगी, भोजन करे सो तोल॥
दान भजन सत्संग करें, है जीवन का सार।
जीवन उत्तम है वही, जिसमें है उपकार॥
यह है सत्य संसार में, जीवन है दिन चार।
पाप कर्म फिर क्यों करें, अब लें सोच-विचार॥
नेक बर्दी दो गाड़ियाँ, रहती सदा तैयार।
मूर्ख चढ़ते बर्दी पर, नेकी पर होशियार॥

मांगें यह वरदान

हाथ जोड़ झुका के मस्तक, मांगें यह वरदान प्रभु॥
द्वेष मिटायें प्रेम बढ़ायें, नेक बनें इंसान प्रभु॥
भेद-भाव सब मिटे हमारा सबको दिल से प्यार करें।
जाए नजर जिस ओर हमारी, तेरा ही दीदार करें।
पल-पल छिन-छिन करें हमेशा, तेरे ही गुणगान प्रभु॥
दुःख से कभी दुःखी ना होवें, सुख में सुख की चाह न हो।
जीवन के रस कठिन सफर में, कांटों की परवाह न हो।
रोक सके न पांव हमारे, विद्वानों के तूफान प्रभु॥
दीन-दुःखी और रोगी सबके, दुखड़े निशदिन दूर करें।
पोंछ के आँसू रोते नैना, हँसने पर मजबूर करें।
तव चरणों की सेवा करते, निकलें तन से प्राण प्रभु॥
तेरे वेद ज्ञान से जग का, दूर अन्धेरा कर दें हम।
सत्य प्रेम के मीठे रस से, सबका जीवन भर दें हम।
'वीर' धीर बन जीना सीखें, हम तेरी सन्तान प्रभु॥

ईश की भगती बिना जीवन यह निष्फल जायेगा।
कीमती चोला ना फिर यह हाथ तेरे आयेगा॥
किसलिये भेजा था बन्दे तुझको मालिक ने यहाँ।
भूल बैठा फर्ज को तू याद कर पछतायेगा॥
नेकियों को छोड़ बर्दियों की तरफ मायल हुआ।
पाप की गठरी लिये सिर पर यहाँ से जायेगा॥
चन्द रोजा जिन्दगी पर इस कदर ना भूल तू।
खाक का पुतला बना तू, खाक में मिल जायेगा॥
भाई-बन्धु रिश्ते-नाते कोठी बंगले मालो जर।
साथ क्या लाया था बन्दे साथ क्या ले जायेगा॥
काम आयेगी तेरे आखिर प्रभु की बन्दगी।
बन्दगी से ही तू बन्दे मुक्ति पद को पायेगा॥

भेंटकर्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य,
सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

भविष्य को ढालने की शक्ति से सम्पन्न हम लोग, अपने ऐश्वर्य स्वयं बनाते हैं, हम स्वयं अपनी तकदीर का निर्माण करते हैं।

स्वामी रुद्रवेश जी का जीवन एक प्रेरणास्रोत

स्वामी रुद्रवेश जी, जिनका निधन दिनांक 06.06.2017 को गांव रायपुर रोड़ान, जिला करनाल (हरयाणा) 89 वर्ष की आयु में हो गया। हालांकि स्वामी रुद्रवेश जी अब हमारे मध्य में नहीं रहे लेकिन उनकी याद हमारे मन में प्रेरणास्रोत के रूप में अब भी विराजित है। उनका जीवन त्याग तथा तपस्या से भरपूर रहा है। वे सच्चे ईश्वरभक्त तथा महर्षि दयानन्द के सच्चे सैनिक रहे हैं। उन्होंने आर्यसमाज का प्रचार करने में कभी दिन तथा रात में भेद नहीं किया। उन्होंने जो कुछ भी किया लगन से किया। वे स्पष्टवादी थे तथा निडर थे। अक्सर यह देखा जाता है कि वक्ता यह सोचता है कि मेरी वाणी से कोई भी व्यक्ति नाराज न हो ताकि श्रोता मेरी प्रशंसा करें लेकिन स्वामी जी ने अपने सामने यदि कोई उद्देश्य रखा है तो केवल यह कि मैं आर्यसमाज के सिद्धान्तों से बाहर न जाऊँ। उनकी सोच रही है कि यदि आर्यसमाज का प्रचार करते हुए कोई व्यक्ति मेरे से नाराज होता है तो सौ बार हो जाए। उनको इस बात की कोई परवाह नहीं थी। स्वामी जी का जीवन संयमी जीवन रहा है। वे जीवन पर्यन्त ब्रह्मचारी रहे। उनका मनसा, वाचा, कर्मणा एक जैसा रहा है। वे इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि संयमी जीवन ही सुखी जीवन है। स्वामी जी किसी भी व्यक्ति से किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करते थे। वे जिस भी व्यक्ति को मिलते, उसको हमेशा ही धर्म व देशप्रेम की शिक्षा देते। उनके जीवन का आधार नैतिकता थी। वे नैतिक मार्ग पर चलनेकी ही शिक्षा देते थे। उन्होंने स्वयं स्वस्थ रहकर समाज-सुधार का कार्य किया है। वे दूसरों को भी स्वस्थ रहने के लिए ही प्रेरित करते रहते थे। स्वामी जी की भारतवर्ष में प्रचार करने के अतिरिक्त हरयाणा के गांव-गांव में हरियाणवी भाषा में प्रचार करना एक विशेषता रही है। चुटकलों तथा भजनों को सुनाकर आर्यसमाज का प्रचार करने का स्वामी जी का अन्दाज निराला था। स्वामी जी के प्रचार करने के तौर-तरीके में एक आकर्षण था। जब कोई उत्सव चल रहा हो और बहुत सारे प्रचारक एवं गायक अपना कार्यक्रम

पेश कर चुके हों और प्रचार सुनने वाले थककर एवं उक्ता कर घर जाने की सोच रहे हों। ऐसे अवसर पर यदि स्वामी जी की अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करने की बारी आ गई हो तो श्रोतागण उठकर नहीं जा सकते थे। स्वामी जी ने भजन तथा चुटकले सुनकर वह इतने आनन्द विभोर हो जाते थे कि जब तक स्वामी जी का कार्यक्रम चलता रहता तब तक घर को ही भूल जाते थे।

स्वामी जी जो भजन गाते थे वैसे तो वे सबके सब अच्छे लगते थे लेकिन जो भजन उनका मेरे को विशेष तौर पर प्रेरणा देता और यह सिद्ध कर देता कि गरीब वह नहीं है जो धनहीन है, बल्कि गरीब वह है जो अधिक इच्छाएं रखता है, जो जितनी अधिक इच्छायें रखता है, वह उतना ही गरीब है। स्वामी जी एक साधु और बादशाह के गरीबी और अमीरी के विवाद को आधार बनाकर वह भजन सुनाते थे कि कौन अमीर है और कौन गरीब है जिसमें कहा गया है जो साधु ने बादशाह को सम्बोधित किया है।

टेक-बादशाहत है तुझे गर्दिश में लाने के लिये।

ये फकीरी है मेरे आनन्द पाने के लिये।

ये फकीरी है.... ॥

1. मखमली गद्दों पर तुझको नौंद तक आती नहीं।

ये कुदरती सब्जा बना मेरे बिछाने के लिये।

ये फकीरी है.... ॥

2. सोने और चांदी के बर्तन हैं तुझे भाते नहीं,।

यह कमण्डलु है मेरा सब काम आने के लिये।

ये फकीरी है.... ॥

3. देखता है नाच तू अस्मत्फरोशों के सदा।

ये पक्षीगण सब नाचते मेरे रिझाने के लिये।

ये फकीरी है.... ॥

4. अब सच्ची बतला दो शाह तू धनी ये मैं धनी।

चन्द्र आया है हमें जो आजमाने के लिये।

ये फकीरी है.... ॥

— ऋषिराम शर्मा, अधिवक्ता जिला न्यायालय,

कुरुक्षेत्र 9416137013

पूर्व जन्मों में किए गए कर्मों के आधार पर ईश्वर ने हमें किसी स्थान-परिवार-परिस्थिति में मनुष्य का जन्म दिया।

देवदयानन्द की 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में रही भूमिका

□ खुशहालचन्द्र आर्य

यह लेख डॉ० रामफल सिंह दलाल एडवोकेट द्वारा लिखित “महर्षि दयानन्द सरस्वती एक परिचय” नामक पुस्तिका में ‘भूमिका’ शीर्षक से उद्धृत है। इस पुस्तक में महर्षि का सन् 1857 में ‘स्वतन्त्रता-संग्राम’ जिसको अंग्रेजों ने ‘सैनिक विद्रोह’ घोषित किया था, उसमें बहुत अधिक सम्बन्ध दर्शाया गया है, जो साधारण व्यक्ति नहीं जानता, इसलिए इस लेख की उपयोगिता व महत्ता को समझकर ही यह लेख मैंने लिखा है, जो इसी भान्ति है।

सन् 1855 ई० में स्वामी जी कुम्भ मेला के लिए हरिद्वार आये और चण्डी पर्वत पर ठहरे। वहाँ वे अनेक साधु-संतों और महात्माओं के संपर्क में आये। इसी स्थान पर स्वामी रुद्रानन्द के माध्यम से क्रान्तिकारी पेशवा नाना साहब, बाला साहब, अजीमुल्ला खां, तात्यां टोपे और कुंवर सिंह, स्वामी जी से मिले। स्वामी जी ने अपने विचार उनके सामने रखते हुए कहा—“भारत असभ्य देश नहीं है। अंग्रेज भारतीयों से अधिक सुसभ्य भी नहीं है। ऐसे देश को पद-दलित करना महापाप है। इसको सहन करना और भी महापाप है।” स्वामी जी ने गुलामी के कारणों पर प्रकाश डाला—“महाभारत के काल से भाई-भाई का आपस में लड़ना ही भारत के सर्वनाश का मुख्य कारण है। मुगल शासन के बाद भी मराठों और सिक्खों की शक्तियों के एक न हो पाने से भारत अंग्रेजों के हाथों में चला गया।” स्वामी जी की घोषणा थी कि “स्वतन्त्रता का युद्ध कभी विफल नहीं होता।”

कुम्भ मेले में स्वामी जी संतों और मठाधीशों से मिले। चारों शंकर पीठों के उत्तराधिकारियों ने स्वाधीनता से कन्नौ काट ली। वैष्णव सम्प्रदाय भी देश, समाज की अपेक्षा भजन-कीर्तन को अधिक श्रेष्ठ मानते थे। अन्य पन्थों के साधु स्वामी जी को ही राष्ट्रीय उद्देश्य से भटकाने लगे। इस मेले में काशी के गौड़ीय मठ के स्वामी विशुद्धानन्द जी भी आये थे। स्वामी जी ने पुरुष सूक्त के मन्त्र ‘ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्’ का अर्थ सुना कि ब्राह्मण परमात्मा के मुख से उत्पन्न हुआ है, तो वे बड़े दुःखी हुए और उसका सही अर्थ बताया कि ब्राह्मण समाज का मुख है। उन्होंने इस मेले में मत-मतान्तरों का निर्भीकता से खण्डन किया। विरोधियों ने

ज्यों-ज्यों स्वामी जी के बारे में दुष्प्रचार किया उससे उनकी प्रसिद्धि बढ़ गई।

कुछ समय उपरान्त झांसी की रानी लक्ष्मीबाई अपनी सहचरी गंगाबाई और तीन अन्य कर्मचारियों के साथ स्वामी जी से मिली। उन्होंने स्वामी जी से हँसते हुए युद्ध में मरने का आशीर्वाद मांगा। स्वामी जी को लगा कि निराश परिस्थितियों में भी स्वाधीनता की चिंगारी शेष है। कहा—“स्वदेश और स्वधर्म की रक्षा के लिए जो अपना नश्वर शरीर दे देते हैं, वे कभी नहीं मरते। हम भगवान् से आपके लिए पुत्र और कल्याण की प्रार्थना करते हैं।” लक्ष्मीबाई ने स्वामी जी के इंकार करने के बाद भी 1001 रुपये दक्षिणा स्वरूप भेंट में दिए। इसी तरह उत्तरी बंगाल से नाटौर की राजधानी भवानी का वंशज गोविन्दराय भी 1001 रुपये भेंट में देकर गया था।

नाना साहब दूसरी बार स्वामी जी से मिले और अपनी निर्दिष्ट योजना स्वामी जी को बताई। यथासम्भव सूचित करने का वचन देकर आशीर्वाद लिया। स्वामी जी ने आशीर्वाद देकर कुछ दक्षिणा राशि जो प्राप्त हुई थी रुपये 2635/- नाना साहब को स्वदेश रक्षा के लिए दिये। साथ ही चेतावनी दी कि “जनसाधारण का नेतृत्व और आग से खेलना, दोनों ही खतरनाक हैं। साधारण-सी भूल से भी सर्वनाश हो सकता है। अतः आपको सदा सबसे सावधान रहना आवश्यक है।” स्वामी जी ने विभिन्न सम्प्रदायों के साधुओं को स्वधर्म रक्षा के लिए तैयार रहने और जन-साधारण में नया उत्साह फूंकने का उपदेश दिया। स्वधर्म को पिता और स्वदेश को माता की संज्ञा देकर इनकी रक्षा करना अनिवार्य बताया। ढाई सौ साधुओं की एक सूची तैयार हुई जो स्वामी जी के आदेश पर देशसेवा के लिए तैयार थे। वे स्वामी जी के आदेश पर सैन्यावास (छावनियों) में कमल का फूल और चपाती बांटकर सैनिकों को स्वदेश और स्वधर्म की रक्षा के लिए प्रेरित करते हुए चारों दिशाओं में फैले। प्रथम स्वातन्त्र्य-समर से दो वर्ष पूर्व ही स्वामी जी ने अपनी ओजस्वी वाणी से हताश साधुओं में वीर-भाव का संचार किया। परन्तु उन्हें अधिकतर धर्मगुरुओं से निराशा ही मिली।

क्रमशः पृष्ठ 14 पर.....

पहले किए कर्मों का फल जाति-आयु-भोग के रूप में मिलना भाग्य कहलाता है और जो कर्म वर्तमान में किए जा रहे हैं वह पुरुषार्थ कहलाता है।

वेदव्याख्या की अपेक्षा....पृष्ठ 6 का शेष....

उत स्वया तन्वा संवदे, कदा न्वन्तर्वरुणे भवानि। किं मे हव्यमाहणानो जुषेत कदा मृडीकं सुमना अभीरव्यम्॥

(ऋ० 7.86.2)

इस मन्त्र में जहां दूसरे मन्त्रों की तरह शब्दार्थ-विचार्य हैं, वहां अन्तर्मनथन के अनेक पहलुओं पर भी विचार किया गया है। यह सब व्याख्या के माध्यम से विशेष विस्तार के साथ सामने लाने की अपेक्षा रहती है।

ऐसे ही ईश्वर के स्वरूप का प्रतिपादन करने वाले 'स पर्वगात्' (यजु० 40,8) और 'अकामो धीरो अमृतः स्वयम्भूः' (अथर्व० 10,8,44) जैसे अनेक मन्त्र हैं। जिनके एक-एक शब्द की व्याख्या अपनी ओर विशेष ध्यान आकर्षित करती है।

अतः धार्मिक कर्मकाण्ड से सम्बद्ध मन्त्रों की अपेक्षा जिन मन्त्रों में जीवन के व्यवहार की बातों का वर्णन है तथा आध्यात्मिक चर्चा है, उन में व्याख्या का विशेष अवकाश रहता है।

भाषागत समस्या-वेदों के प्राचीनतम होने से उनकी वाक्य-योजना तथा शब्द प्रयोग आज की संस्कृत भाषा से अनेक रूपों में भिन्न हैं। इसके साथ वेद पद्यबद्ध हैं, गद्य की वाक्य योजना की तरह वहां स्पष्ट और पूरे शब्दों का प्रयोग नहीं होता।

अतः वहां अध्याहार का पर्याप्त अवसर रहता है, किस-किस का अध्याहार हो इसमें मतभेद हो जाना साधारण बात है। इसीलिए वेदव्याख्या का ऐसा रूप सामने आना कठिन हो जाता है, जो सर्वमान्य हो, हां, वेदमन्त्रों के शब्दों पर उदात्तादि स्वरों का प्रयोग भी व्याख्या की प्रवृत्ति में झिझक उत्पन्न करता है।

वेदों की वर्णन शैली-वेदमन्त्रों का जब हम स्वाध्याय करते हैं, तो अनुभव में आता है कि वहां कुछ मन्त्रों में अग्नि को लक्ष्य करके और कहीं इन्द्र, सोम, विष्णु आदि को लक्ष्य करके अनेक मंत्र आते हैं। अतः वेदमन्त्रों को समझने के लिए प्रथम अग्नि आदि देवता पदों को समझना आवश्यक है। क्योंकि मन्त्रों के वर्णन का केन्द्रबिन्दु ये अग्नि, इन्द्र आदि देवता पद ही हैं। यह बात वेद के एक मंत्र में इस प्रकार से निर्दिष्ट की गई है—

प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थ्यम्। यस्मिन्निन्द्रो करुणो मित्रो अर्यमा देवा ओकाशंसि चक्रिरे॥ (ऋ० 1,40,5)

जैसे व्यक्ति अपने घर में अपने से सम्बद्ध विविध कार्यों को करता है, अनेकविध रिश्तों को निभाता है। ऐसे ही इन्द्र आदि देवता पद ईश्वर, जीव, प्रकृति प्रभृति अर्थों को दर्शाते हैं, जिनका निर्णय मन्त्रगत विशेषणों तथा क्रियापद से होता है।

यही बात महर्षि दयानन्द जी ने 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रथम समुल्लास के प्रारम्भ में "अग्नि आदि नामों से परमेश्वर के ग्रहण में प्रकरण और विशेषण नियमकारक है।" इत्यादि दस पंक्तियां विशेषरूप से पठनीय हैं। इस प्रकरण से वेदव्याख्या की दिशा प्राप्ता की जा सकती है और यह सन्दर्भ वेदार्थ की कुञ्जी का कार्य करता है।

जहाँ से आरम्भ किया....पृष्ठ 7 का शेष....

आर्यसमाज भवनों में हुए वे निश्चित ही भ्रमवश हुए, उसमें भ्रम चाहे जोड़ों ने फैलाया हो या पुरोहित का रहा हो। पूज्य दिवंगत आचार्य बलदेव जी ने ऐसे विवाह न कराने की आज्ञा भी जारी की थी। ऋषि दयानन्द जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के चतुर्थ समुल्लास में गोत्र छोड़कर, दूर विवाह करने के जो वैज्ञानिक लाभ दिए हैं, वे अन्यत्र कहाँ मिलेंगे? श्रीराम, श्रीकृष्ण, वीर हनुमान के विषय में जो भ्रान्तियाँ हैं, जातिवाद का विष फैलाकर समाज को तोड़ने की जो साजिश है, धर्मान्तरण की जो समस्या है, उसका निदान-उपचार आर्यसमाज के अतिरिक्त और कहाँ है? ऐसे में इन चन्द नेताओं ने सदा आर्यसमाज पर विष वमन करने वाले रामपालदास की गोद में बैठकर कितनी भारी भूल की है? अपनी ही खाप पंचायत के नेताओं से विरोध रखने वाले ये नेता रामपालदास से मेल पर जातिवाद की दुहाई देते हैं? इससे बड़ी विडम्बना क्या होगी? इस शीर्षक को सबको ध्यान में रखना चाहिए—'रावण जोगी के भेष में'।

फिर आर्यजनों से प्रार्थना है कि जातिगत, राजनैतिक स्वार्थों से ऊपर उठकर इस मायाजाल को छिन्न-भिन्न कर दें। गांव-गांव निकलो, गांव-गांव चलो व पोपलीला का भजन कर दो। विशेषकर रोहतक (हरयाणा) के आस-पास गांव में विद्वान्, उपदेशक, भजनोपदेशक स्वयं अपनी सेवाएं देवें।

ईश्वर हमारे मन के, वाणी के और शरीर के, तीनों प्रकार के कर्मों को नोट करता है।

गायत्री मंत्र—गुरुमन्त्र—गुरु परमात्मा है

गतांक से आगे....

पांच सूक्ष्म तत्त्व-पांचों परमाणुओं से मनुष्य का शरीर बनता है-पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, अग्नि। जल में रस, अग्नि में रूप, वायु में स्पर्श और आकाश में शब्द स्वाभाविक है।

तीन तत्त्व अनादि-आत्मा, परमात्मा, प्रकृति न ही पैदा होते, न ही जन्म लेते हैं।

चार वेद-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

चार ऋषियों के नाम-अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा। वेदों का ज्ञान सृष्टि के आदि में ईश्वर ने इन्हीं को दिया।

छह शास्त्रों के नाम-न्यायशास्त्र (गौतम मुनि), सांख्यशास्त्र (कपिल मुनि), योगशास्त्र (पतञ्जलि मुनि), वेदान्तशास्त्र (वेदव्यास मुनि), मीमांसाशास्त्र (जैमिनि मुनि), वैशेषिकशास्त्र (कणाद मुनि)।

पांच महाभूत-काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार।

पांच महायज्ञ-पहला ब्रह्मयज्ञ-सुवह-सायं की सन्ध्या-उपासना करना, धार्मिक ग्रन्थ पढ़ना, दूसरा देवयज्ञ-यज्ञ से वायु शुद्ध, वायु जिधर जावे उससे जल शुद्ध, जल शुद्ध जनता को चाहिए क्योंकि पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, कीट-पतंग-मनुष्य को ऑक्सीजन चाहिए। यज्ञ से वर्षा होती है, वर्षा से अन्न जड़ी बूटी अनेक औषधि पैदा होती है, प्रदूषण खत्म होता है, फल-फूल, बाग-बगीचे शुद्ध होते हैं। तीसरा पितृयज्ञ-माता-पिता, दादी-दादा, नानी-नाना, आचार्य, कोई बुजुर्ग की सेवा करना, कड़वा न बोलना ही पितृयज्ञ है। चौथा बलिवैश्वदेव यज्ञ-पशु-पक्षी, कीट-भूखा, भिखारी, कुत्ता, बिल्ली, गाय की सहायता करना जैसी अपनी सामर्थ्य हो। पांचवां अतिथियज्ञ-घर आए मेहमान की सेवा-सहायता करना, भोजन, स्नान, कपड़े, जूते वगैरह ढोंगी कपटी को छोड़कर।

चार वर्ण-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

पहला ब्राह्मण-वह है पण्डित जिसमें छह गुण हों, विद्या के वेद को पढ़ना, पढ़ाना-सुनना-सुनाना-दोनों समय सन्ध्या-उपासना और यज्ञ करना, वही पण्डित है, पण्डित के जन्म लेने से नहीं।

क्रमशः अगले अंक में....

—कृष्णा देवी आर्या, (प्रधान महिला मंडल)

आर्यसमाज गाँव बालन्द, जिला रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मनी आचार्य योगेन्द्र आर्य मनी पद से निलम्बित, सभा के उपमनी श्री उमेद शर्मा ने मनी पद का कार्यभार संभाला

सभामन्त्री आचार्य योगेन्द्र आर्य द्वारा किये गये सभा विरोधी कार्यों और सभा के कार्यालय में अनुशासनहीनता की प्रारम्भिक जांच रिपोर्ट दिनांक 21.06.2017 के आधार पर सभामन्त्री को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है जिसका जवाब देने के लिए उन्हें 15 दिन का समय दिया गया है और सभा के संविधान के अनुच्छेद (19क) में प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करते हुए आचार्य योगेन्द्र आर्य को सभा के मन्त्री पद से निलम्बित करके मन्त्री पद का कार्यभार सभा के उपमन्त्री श्री उमेद शर्मा को दे दिया है। सभा के संविधान की धारा 19-ग के अन्तर्गत सभा के मन्त्री के रूप में आचार्य योगेन्द्र आर्य के स्थान पर श्री उमेद शर्मा सभा की पाक्षिक पत्रिका 'आर्य प्रतिनिधि' के सम्पादक का कार्य भी करेंगे। —प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

देवदयानन्द की 1857... पृष्ठ 12 का शेष...

अप्रैल, 1855 से नवम्बर, 1860 तक का स्वामी जी के कार्यक्षेत्र का चुप भाग है जो उनके जीवन प्रसंगों में नहीं आता। निःसन्देह युगपुरुष दयानन्द सरस्वती क्या इस आन्दोलन में तटस्थ रहने वाले थे ? वे अवश्य ही इस महान् कार्य में किसी महान् लक्ष्य की प्राप्ति में संलिप्त अवश्य थे। इस कार्यकाल के बारे में जब उनसे पूछा गया तो उनका उत्तर था कि इस रहस्य को उजागर करने पर भारत कभी भी स्वतन्त्र नहीं हो पायेगा।

महर्षि दयानन्द का जीवन प्रेरक-प्रसंगों से भरा पड़ा है। श्री डॉ० रामफल दलाल के इस संकलन में उत्तम-प्रसंगों, कार्यक्षेत्र एवं व्याख्याओं की एक झलक दिखाने का उत्तम प्रयास है। प्रस्तुत संकलन स्वामी जी की जीवनी न होकर उनकी प्रेरणादायक घटनाओं को अपने अन्दर समेटे हुए है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पाठकवृन्द इसे पढ़कर अवश्य लाभ उठा पायेंगे।

संपर्क-गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7 फोन 033-22183825, 64505013, ऑफिस-26758903

ईश्वर हमारे मन के, वाणी के और शरीर के, तीनों प्रकार के कर्मों को नोट करता है।

समाचार-प्रभाग

वेदप्रचार मण्डल जिला गुरुग्राम द्वारा 27.05.2017 से 04.06.2017 तक के कार्यक्रमों का विवरण

(1) दिनांक 27.05.2017 को सायंकाल 5.30 बजे से 7.30 बजे तक भजन संध्या का आयोजन सैक्टर-45 गुरुग्राम के तिकोना पार्क में वेदप्रचार मण्डल जिला गुरुग्राम की ओर से किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ ब्रह्म पं० नरेन्द्र शर्मा द्वारा किया गया। इस आयोजन में सैक्टर-45 निवासी श्री महेन्द्र सिंह यादव एडवोकेट का विशेष सहयोग मिला। आमन्त्रित विद्वानों में डॉ० सत्येन्द्र प्रकाश सत्यम् वैदिक विद्वान् तथा पं० संदीप आर्य युवा भजनोपदेशक ने अपने प्रवचनों एवं भजनों द्वारा उपस्थित जनसमुदाय को प्रभावित किया। स्थानीय निवासियों ने ऐसे कार्यक्रम भविष्य में भी आयोजित करने का आग्रह किया जिसे मंडल अधिकारियों ने सहर्ष स्वीकार किया। मण्डल की ओर से मण्डल संरक्षक श्री कन्हैयालाल जी आर्य, प्रधान के.सी. सैनी, महामंत्री वेदभानु आर्य एवं ग्रामीण क्षेत्र से आर्य युवा नेता श्री सज्जनसिंह यादव भी शामिल हुए।

(2) दिनांक 29.05.2017 को सायंकाल सैक्टर-5 गुरुग्राम के बड़े पार्क में मण्डल द्वारा भजन संध्या का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता वयोवृद्ध श्री ओमप्रकाश जी कालरा पूर्व प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा गुरुग्राम ने की। आयोजन अत्यन्त सराहनीय रहा तथा सैक्टर निवासियों ने आयोजन की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं सहर्ष कुछ दानराशि भी मण्डल अधिकारियों को प्रदान की। युवा भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य अपने भजनों द्वारा श्रोताओं को मन्त्रगुग्ध किया। मंडल की ओर से अनेक अधिकारियों एवं सदस्यों ने भाग लिया जिसमें प्रमुख रूप से श्री कन्हैयालाल आर्य, श्री के.सी. सैनी, श्री वेदभानु आर्य, श्री बलदेवकृष्ण गुगलानी, श्री राजपाल आर्य, बहन उषा आर्य, श्रीमती लक्ष्मी, श्रीमती कृष्णा तथा सैक्टर-5 की स्त्री आर्यसमाज सम्मिलित हुए। इस आयोजन में सैक्टर-5 निवासी श्री पारथ सिंह चौहान पूर्व प्रधानाचार्य तथा श्री अटल यादव का विशेष सहयोग रहा।

(3) वेदप्रचार मंडल जिला गुरुग्राम द्वारा चरित्र

निर्माण व योग शिविर का आयोजन- दिनांक 31 मई 2017 तक महर्षि दयानन्द सीनियर सैकण्डी स्कूल ग्राम माकडोला जिला गुरुग्राम में चरित्र निर्माण व योगशिविर का सफल आयोजन किया गया। ग्रामीण क्षेत्र में मंडल के इस आयोजन से ग्रामीण युवक और युवतियों पर वैदिक विचारधारा का गहरा प्रभाव पड़ा। शिविर में 26 छात्राओं एवं 34 छात्रों ने भाग लिया।

बौद्धिक शिक्षक के रूप में आचार्य राजहंस मैत्रीय एवं व्यायाम शिक्षकों ने पांच दिनों तक शिविरार्थियों को नियमानुसार सुसंस्कृत करने के लिए वैदिक मान्यताओं, प्रारम्भिक वेदज्ञान, महापुरुषों विशेषकर महर्षि दयानन्द, आर्य वीर और वीरांगनाओं के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। व्यायाम शिक्षकों ने संगीत के माध्यम से यौगिक क्रियायें सिखाईं। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने की तथा मुख्य अतिथि श्री लक्ष्मणदास पाहूजा प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा गुरुग्राम रहे। इसके अतिरिक्त मंडल प्रधान श्री के.सी. सैनी, महामंत्री वेदभानु आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान श्री वी.पी. सिंह, पूर्व प्रधान शिवाजी नगर श्री रामबगल जी आर्य शामिल हुए।

शिविर के समापन समारोह में दिनांक 04.06.2017 को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से श्री सर्वमित्र आर्य प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा एवं श्री ओमजी सम्मिलित हुए। समारोह की अध्यक्षता श्री कन्हैयालाल जी आर्य ने की। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभाशाली छात्र एवं छात्राओं को प्रस्तोता द्वारा मोमेन्टो, वैदिक साहित्य एवं प्रमाण पत्र वितरित किये।

अन्य शिविरार्थियों को भी वैदिक साहित्य एवं प्रमाण-पत्र वितरित किये। इस आयोजन का मुख्य श्रेय मंडल के मंत्री एवं संस्था के संचालक श्री जोगिन्द्र सिंह सहरावत को जाता है। मंडल की ओर से उन्हें विशेष रूप से मोमेन्टो द्वारा श्री सर्वमित्र जी आर्य प्रस्तोता द्वारा सम्मानित किया गया। पं० संदीप आर्य ने अपने मधुर भजनों के द्वारा जनसमूह को आनन्दित किया। मंच संचालन तथा धन्यवाद वेदभानु आर्य महामंत्री द्वारा किया गया।

कोई भी कर्म निष्फल नहीं होता। फल जरूर मिलेगा, समय आने पर मिलेगा, सभी कर्मों का फल तत्काल नहीं मिलता।

गांव-गांव में वेदप्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल जीटी रोड पानीपत विद्यालय के निदेशक आचार्य अभय आर्य द्वारा गांव-गांव में यज्ञ करने का संकल्प लिया था और यज्ञ के करने से क्या लाभ हैं, यज्ञ क्यों और कैसे करना चाहिए? आज समाज में बहुत-सी बुराइयाँ फैल रही हैं, उनको कम करने व आपसी भाईचारे व गांव की खुशहाली व शान्ति के लिए गांव-गांव में यज्ञ व प्रचार किया गया है। आज दिनांक 24.6.2017 को 98वें गांव में यज्ञ किया गया।

इस अभियान के दौरान बीच में इस दुष्ट रामपालदास का भी कार्यक्रम हुआ। हमारा सारा कार्यक्रम अब रोहतक जिले में आरम्भ किया गया जिसमें गांव रिठाल, निदाना, भराण, निगाणा आदि गांवों में अभियान चलाया गया। इस अभियान के तहत गांव के लोग आर्यसमाज के कार्यक्रम के बहुत स्थान से सुनते व यज्ञ करते हैं। एक गांव में कार्यक्रम लगभग डेढ़ से दो घण्टे का होता है। लोगों में आर्यसमाज के प्रति काफी उत्साह है और कहते हैं कि आर्यसमाज जैसा कोई समाज नहीं है। गांव के लोग कहते हैं कि अगली बार ज्यादा संख्या में इकट्ठे होंगे। आचार्य अभय आर्य जी यज्ञ करवाते हैं और उपदेश देते हैं कि हम सब आर्य हैं, ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलना चाहिए ताकि ऋषि-ऋण उतर सके।

बृहदयज्ञ व वेदोपदेश सम्पन्न

दिनांक 28 मई 2017 को भऊ जयमलपुर रोहतक में संस्कार यज्ञ सम्पन्न हुआ। आचार्य वेदमित्र जी के ब्रह्मत्व में प्रथम यज्ञ सम्पन्न हुआ। आचार्य जी ने संस्कारों के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में युवाओं को जनेऊ प्रदान किये गये।

आर्यसमाज 'शहर' बड़ा बाजार सोनीपत का निर्वाचन

श्री ईश्वरदत्त बुधीजा-संरक्षक, श्री सुभाष चांदना-प्रधान, श्री वेदप्रकाश आर्य-उपप्रधान, श्री दिनेश आर्य-उपप्रधान, श्री सुदर्शन आर्य-उपप्रधान, श्री प्रवीण आर्य-मंत्री, श्री रवीन्द्र आर्य-उपमंत्री, श्री दीपक तलवार (आर्य) कोषाध्यक्ष, श्री ओमप्रकाश आर्य-पुस्तकाध्यक्ष तथा सूचना प्रौद्योगिकी (IT), श्री श्यामलाल आर्य-आर्यवीर दल अधिष्ठाता, श्री रणवीर सिंह बांगड़-लेखा परीक्षक। अन्तरंग सभासद-श्री मनोहर लाल सपड़ा, श्री सुभाष रहेजा, श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री जितेन्द्र बत्रा।

प्रवेश प्रारम्भ

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा संस्थापित वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़, गुजरात के 'संस्कृत व्याकरण, उपनिषद् एवं दर्शन अध्यापन केन्द्र' में ब्रह्मचारियों को प्रवेश दिया जा रहा है।

यहाँ पिछले पाँच वर्षों से संस्कृत, व्याकरण का अध्ययन-अध्यापन चल रहा है। वर्तमान में आचार्य श्री शक्तिनन्दन जी के द्वारा अष्टाध्यायी, प्रथमावृत्ति तथा धातुवृत्ति का अध्यापन किया जा रहा है। अष्टाध्यायी के साथ संस्कृत भाषा का भी प्रशिक्षण दिया जायेगा।

इसके साथ प्रतिदिन सन्ध्या, हवन, आत्मनिरीक्षण व समय-समय पर अनेक विद्वानों के दार्शनिक-आध्यात्मिक प्रवचन एवं योगनिष्ठ गुरुवर्य पूज्य स्वामी सत्यपति जी का सान्निध्य, प्रेरणा व उपदेश भी प्राप्त होता रहता है। आश्रम फल-फूल, वृक्षों से युक्त रमणीय वातावरण से परिपूर्ण शान्त एकान्त स्थान में स्थित है। बिना किसी पक्षपात के आवास, भोजन, वस्त्र, पुस्तक आदि समस्त साधन पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध कराये जाते हैं। कुछ काल के लिए ब्रह्मचारियों का परीक्षण किया जाता है। गुरुकुलीय दिनचर्या, पूर्ण अनुशासन, योगाभ्यास व अध्यात्म में रुचि रखने वाले ब्रह्मचारी ही प्रवेश के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें। स्थान सीमित हैं।

व्यवस्थापक—

संस्कृत व्याकरण, उपनिषद् एवं दर्शन अध्यापन केन्द्र
वानप्रस्थ साधक आश्रम

आर्यवन, रोजड़, पो० सागपुर, जिला साबरकांठा, गुजरात-383307
(02770) 287417, 9427059550, 940858391
Email : vaanaprastharoad@gmail.com
Web : www.vaanaprastharoad.org

महर्षि दयानन्द के उपकार

अधर्म और अत्याचार फैला था चारों ओर,
राहें बहुत कठिन थीं जीवन एक फन्द था।
मानव भी अनभिज्ञ थे; वेद प्रायः लुप्त थे,
अन्धविश्वास की आवाज़ भी बुलन्द था।
रोती-बिलखती रहीं अबलायें चीख-चीख,
कुमार्ग ही कुमार्ग; सुमार्ग द्वार बन्द था।
खोल दीं राहें 'सरस' महर्षि दयानन्द ने,
भारत का विधाता तो महर्षि दयानन्द था।
—सुरेन्द्र कुमार 'सरस', रोहतक 9254069111

किये गये कर्मों का फल वर्तमान जन्म में तथा अगले जन्मों में भोगना पड़ता है।



अनन्त ज्ञान को रखना, वेदों का ज्ञान देना, यह ईश्वर का कर्म है।

Postal Regn. - RTK/010/2017-19

श्री

पता

.....



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए
आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा